34

शरीर बनाम आत्मा

(8:5-13)

पौलुस ने आमतौर पर भिन्नताओं का इस्तेमाल किया। उसकी कुछ भिन्नताएं इस रेखाचित्र में संक्षिप्त की गई हैं:

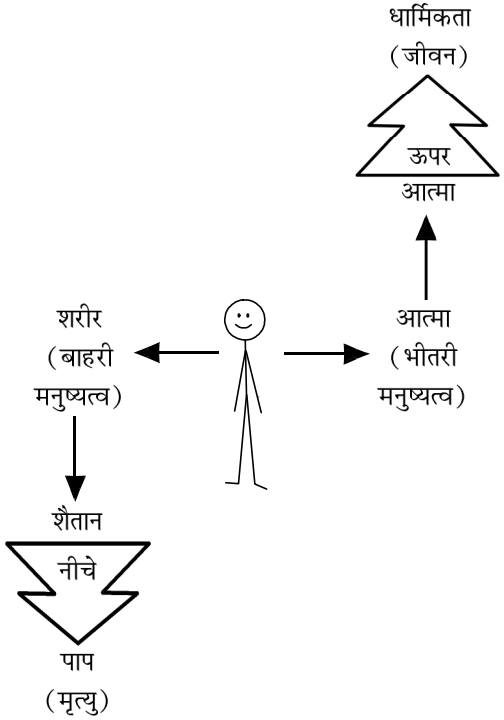

7:14-25 में शरीर (बाहरी मनुष्यत्व) और आत्मा (भीतरी मनुष्यत्व) में भिन्नता बनाई हुई है। अध्याय 8 मु यतया शरीर बनाम आत्मा (पवित्र आत्मा) पर चर्चा करता है।[1] पौलुस ने ज़ोर दिया कि शरीर मृत्यु देता है, जबकि आत्मा जीवन देता है।

दो दिशाएं (8:5-8)

कारण (आयत 5)

"मसीह में दण्ड की आज्ञा नहीं" पाठ आयत 4 के साथ समाप्त हुआ था जो "शरीर के अनुसार" नहीं वरन "आत्मा के अनुसार" "जीने" के बीत करती है। कार्य मनों या हृदयों से

निकले विचारों से ही आते हैं (देखें नीतिवचन 4:23; 23:7; लूका 6:45)। इसलिए पौलुस ने आगे कहा, "ज़्योंकि [*gar*, उनके लिए कारण बताते हुए जो] शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक [अपना ध्यान] आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं" (रोमियों 8:5)।

हमारा वचन पाठ उन कुछ लोगों की बात करता है "जो शरीर की बातों पर [*kata*] मन लगाते हैं" और दूसरे जो "आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।" मेकोर्ड के अनुवाद में पहले समूह के लोगों को "जो शरीर के अनुसार चलते हैं," और दूसरों को "जो आत्मा के अनुसार चलते हैं" कहा गया है। NEB उन लोगों की बात करता है, जो आत्मा "के स्तर पर जीवन बिताने" के विपरीत शरीर के "स्तर पर जीवन बिताते" हैं।

शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर *मन लगाते* हैं (आयत 5क)। "मन लगाते हैं" शब्द अकेले यूनानी शब्द *phroneo* से लिया गया है, जिसका अर्थ "पर अपना मन लगाना," "पर संतुष्ट होना" है।[2] मेकोर्ड के अनुवाद में "पर ध्यान लगाना" है। *Phroneo* व्यक्ति की इच्छा की मूल दिशा का संकेत देता है।[3] "व्यवहार को निश्चित करने का काम जीवन का व्यवहार करता है।"[4]

"शारीरिक बातों" वाक्यांश को देखने पर हमारे ध्यान में वह आ सकता है, जो अनैतिक या पूरी तरह से बुरा है। "शारीरिक बातों" में ऐसा व्यवहार भी शामिल होना आवश्यक है, परन्तु इस वाक्यांश को यहां तक सीमित नहीं किया जा सकता। गलातियों 5:19-21 में "शरीर के काम" देखें। उसमें "अनैतिकता" और "मतवालापन" है परन्तु "द्वेष" और "डाह" भी है।

"शारीरिक बातें" *इस* संसार के कार्य और व्यवहार हैं जो अस्थाई है यानी बीतता जाता है। "अपना ध्यान" शारीरिक बातों पर लगाने का अर्थ है कि ऐसा करने वाले लोग इस जीवन अर्थात सांसारिक जीवन में खो गए हैं। वे केवल उन्हीं बातों पर ध्यान लगाते हैं जिन्हें वे देख सकते, चख सकते या महसूस कर सकते हैं। फिलिप्स के संस्करण में "सांसारिक [शारीरिक] व्यवहार प्राकृतिक चीज़ों से आगे नहीं देखता" है।[5] मत्ती 6:31 में शारीरिक सोच वाले व्यक्ति की "त्रिएकता" के विषय में बताया गया है।[6] " 'हम ज़्या खाएंगे?' या 'हम ज़्या पीएंगे?' या 'हम ज़्या पहनेंगे?' " पौलुस ने उनके विषय में लिखा जिनका "ईश्वर पेट है, ... और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं" (फिलिप्पियों 3:19)। कोई व्यक्ति हंसमुख, दयालु, आकर्षक, पढ़ा लिखा, सज्य, प्रसिद्ध, कठिन परिश्रम करने वाला और अच्छा पड़ोसी होने के बावजूद, शारीरिक बातों पर "मन" लगाने वाला हो सकता है।

इसके विपरीत "आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं [उनका ध्यान आत्मिक बातों पर है]"[7] (रोमियों 8:5ख)। "आत्मा की बातें" परमेश्वर की आत्मिक चिंताएं हैं जिनका सज़्बन्ध सनातन काल से है। आम तौर पर इन्हें देखा नहीं जा सकता, परन्तु वे उससे अधिक वास्तविक होती हैं जितना दिखाई दे सकता है। वे इस संसार के खत्म होने के बाद भी सदा तक रहेंगी।

अपना ध्यान आत्मा की बातों पर लगाना आसान काम नहीं है। हमारे इर्द-गिर्द ऐसी बातें पाई जाती हैं जिन्हें पांच इन्द्रियों से अनुभव किया जा सकता है। हम पर इस संदेश का हमला होता है कि हमें कुछ उत्पादों या सेवाओं की *आवश्यकता है,* कि वे हमारी प्रसन्नता अर्थात बेहतरी के लिए आवश्यक हैं।[8] चाहे हम मसीही हों तौभी यदि हम शरीर की देखभाल के लिए थोड़ा-सा भी विचार

करते हैं तो हमारे लिए शारीरिक सोच वाले *न* होना लगभग असम्भव हो जाएगा। इसीलिए हमारे जीवनों के केन्द्र में वह होना आवश्यक है जो हमारा ध्यान आत्मिक बातों पर लगा सके, जैसे:

- बाइबल पढ़ना और अध्ययन करना।
- जोशीली और बार-बार की प्रार्थना।
- कलीसिया की आराधना सभाओं में विश्वास से भाग लेना।
- प्रभु के काम में भाग लेना।
- आत्मिक सोच वाले मसीही लोगों से सम्बन्ध।

परिणाम (आयत 6)

शारीरिक सोच वाले होने के बजाय आत्मिक सोच वाले होना क्यों आवश्यक है? एक ओर तो, "शरीर पर मन लगाना [*phrolena, phroneo* अर्थात "विचार" का संज्ञा रूप] तो मृत्यु है" (आयत 6क)। शारीरिक रूप में हर कोई मरता है (यहां तक कि आत्मिक सोच वाले भी), इसलिए "मृत्यु" यहां आत्मिक मृत्यु को ही कहा गया होगा जो परमेश्वर से (देखें यशायाह 59:1, 2) अब और अनन्तकाल के लिए अलग होना है।

दूसरी ओर, "आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है" (रोमियों 8:6ख)। "जीवन" यहां आत्मिक जीवन को कहा गया है: "परमेश्वर के साथ आत्मिक मेल और संगति और वे आशिषें जो उससे मिलती हैं।"[9] उस "जीवन" के साथ "शांति" ही जुड़ी है। 5:1 में पौलुस ने कहा, "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।" मसीही होने के नाते जब हम अपने मन आत्मा की बातों पर लगाते हैं तो स्वर्गीय शांति मिलती रहती है बल्कि और भी गहरी हो जाती है।

वास्तविकता (आयतें 7, 8)

पौलुस ने शारीरिक बातों पर मन लगाने का अन्तिम परिणाम बताया था (यानी, मृत्यु), परन्तु वह वैसी सोच की विडम्बना और त्रासदी को स्पष्ट कर देना चाहता था। उसने कहा, "शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है" (8:7क)। "बैर रखना" का अनुवाद *echthra* से किया गया है जो "एक दूसरे से *घृणा करना और विरोध करना*" के लिए *echthros* से लिया गया है।[10] लियोन मौरिस ने लिखा कि इसका अर्थ "केवल थोड़े से असहयोग करने वाले होना" नहीं बल्कि "यह तो सीधा वैर है।" उसने जोड़ा कि *echthra* "एक मज़बूत शब्द है जिसे कमज़ोर नहीं करना चाहिए।"[11]

मैं ऐसे व्यक्ति की ओर से जिसका ध्यान इस संसार पर लगा है विरोध की कल्पना कर सकता हूं, "परन्तु मैं धर्म का विरोध नहीं करता। मैं खतरनाक बातें नहीं करता। मेरे मन में परमेश्वर के बारे में भयानक विचार नहीं है।" यह सब सही हो सकता है, परन्तु जो व्यक्ति इस संसार पर ध्यान लगाए है वह अपने जीवन के लिए परमेश्वर की उपेक्षा कर रहा है। वह उसका सामना कर रहा है और उसका विरोध कर रहा है। यही बात उसे परमेश्वर का *बैरी* बना देती है।

पौलुस ने आगे कहा कि शारीरिक बातों पर लगा मन "न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन

है, और न हो सकता है'' (आयत 7ख)। इस संदर्भ में ''परमेश्वर की व्यवस्था'' मूसा की व्यवस्था को ही कहा गया है,[12] परन्तु यह नियम परमेश्वर द्वारा दी गई किसी भी व्यवस्था के लिए लागू होता है। 7:14-25 में पौलुस ने लिखा कि वह मूसा की व्यवस्था का पालन इसलिए नहीं कर पाया, ज़्योंकि शारीरिक था। आज भी यह बात सच है कि शारीरिक सोच वाले लोग परमेश्वर की व्यवस्था को न तो पूरा करते हैं और न कर सकते हैं।

कई लोग ''न ... है, और न हो सकता है'' वाज़्यांश को ''पूर्ण आनुवंशिक भ्रष्टता'' अर्थात आदम के पाप की भ्रमित शिक्षा के प्रमाण के रूप में देखते हैं, परन्तु पौलुस कोई नया विचार नहीं दे रहा था। वह 7:14-25 में कही बात पर ही पुन: जोर दे रहा था। शारीरिक सोच वाले व्यज़्ति के लिए अपने आप को परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन लाना असज़्भव ज़्यों है? नियम बड़ा आसान है। यदि आप पश्चिम में जाने की ज़िद कर रहे हैं तो आपके लिए पूर्व में जाना असज़्भव है। यदि आप पानी में कूदने की ज़िद कर रहे हैं तो बाहर सूखे रहना आपके लिए असज़्भव है। यदि आप खाने या पीने से इनकार करते हैं तो आपका पेट भरना असज़्भव है।

इस कारण पौलुस ने निष्कर्ष निकाला ''जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते'' (8:8)। ''शारीरिक दशा में'' का अर्थ ''मास की बनी देह में वास करना'' नहीं है ज़्योंकि इसका अर्थ तो यह होगा कि हम में से *कोई भी* परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता। इसके बजाय ''शारीरिक दशा में'' होने का अर्थ परमेश्वर की सहायता के बिना पूरी तरह से अपने मानवीय (शारीरिक) संसाधनों पर निर्भर होकर जीवन बिताने की कोशिश करना है।[13] यह तो परमेश्वर के आत्मा के बजाय शरीर के अधीन होना है (आयत 9 से तुलना करें)।

कइयों के लिए आयत 8 प्रतिकर्ष वाली प्रतीत हो सकती है। ज़्या परमेश्वर को न पसन्द होने से (आयत 8) बुरा आत्मिक मृत्यु (आयत 6)? वास्तव में नहीं। जब हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते तो हम अपने उद्देश्य को पूरा नहीं कर रहे होते (आयत 4 पर चर्चा देखें)। पृथ्वी पर हम दूसरी कोई भी प्राप्ति ज़्यों न कर लें, यदि हम वैसे व्यज़्ति नहीं हैं जैसे परमेश्वर हमें चाहता है तो हमारा जीवन बेकार है!

दो वास करने वाले (8:9-11)

पौलुस आत्मा के अधीन होने की बात कर रहा था। आयत 9 के आरज़्भ से उसने व्यज़्तिगत प्रासंगिकता बनाई। वह अन्य पुरुष (''वे''; आयत 8) से मध्य पुरुष (''तुम''; आयत 9) में आ गया।

रोमियों 8:9-11 में मुज़्य शज़्द ''बसता'' है (देखें आयतें 9, 11)। 7:17, 20 में पौलुस ने *पाप* के उन में बसने की बात की। हमने देखा कि ''बसता'' (*oikeo*) थोड़ी देर टिकने के लिए नहीं बल्कि ''अपना वास बना लेने'' को कहा गया है। 8:9-11 में पौलुस ने एक अर्थ में पुराने शारीरिक वास करने वाले को नये ईश्वरीय वास करने वाले से अलग बताया।

आयत 9 से दिमाग में वह आता है जो परमेश्वर ने *किया* है: जब हमारा बपतिस्मा होता है तो दान के रूप में वह हमें आत्मा देता है। आयत 10 उसकी बात करती है जो परमेश्वर कर रहा है यानी वह हमें उस आत्मा के द्वारा जो उसने दिया है जीवन दे रहा है। आयत 11 उसकी बात करती है जो परमेश्वर *करेगा* यानी एक दिन वह हमें उस आत्मा के द्वारा जो उसने हमें दिया है मरे हुओं में से जिलाएगा।

परमेश्वर ने जो किया है (आयत 9)

पौलुस ने कहा था कि "जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते" (आयत 8)। "परन्तु," उसने कहा, "परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं" (आयत 9क, ख)। इस कथन में, "तुम" शब्द पर ज़ोर दिया गया है।[14] प्रेरित कह रहा था कि "जो लोग शारीरिक दशा में हैं वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते" (आयत 8), परन्तु तुम पर यह बात लागू नहीं होती; "क्योंकि *तुम* शारीरिक नहीं बल्कि आत्मिक हो।"

इसमें "यदि" जोड़ा गया है: "*यदि* परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है" (आयत 9क)। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने अपने सुनने वालों से कहा था, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; *तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे*" (प्रेरितों 2:38)। उस वचन में "पवित्र आत्मा का दान" "पिता के अधिकार के अधीन रहकर महिमा पाए हुए प्रभु द्वारा दिए गए" आत्मा को कहा गया है।[15] प्रेरितों 5:32 में प्रेरितों ने "पवित्र आत्मा का दान" उसे कहा गया है जो "परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा मानते हैं।" बपतिस्मा लेने के समय आश्चर्यकर्म रहित इस दान को "आत्मा का वास" कहा गया है (रोमियों 8:9, 13, 16, 17, 26; 2 तीमुथियुस 1:14; देखें 1 कुरिन्थियों 6:19; गलातियों 4:6, 7; इफिसियों 1:13, 14)।

पवित्र आत्मा "मसीही लोगों में" *वास* कैसे करता है? इस प्रश्न पर चर्चा हम 8:9, 11 वाले पाठ में आगे करेंगे। अभी के लिए मैं केवल दो सच्चाइयों पर ध्यान दिलाना चाहता हूं। पहला जैसा कि पहले सुझाव दिया गया, अध्याय 8 में आत्मा का वास अध्याय 7 में पाप के वास से उलट है। जैसे पाप व्यक्ति के मन में निवास कर सकता है, वैसे ही परमेश्वर का आत्मा मन में अपना वास बनाना चाहता है। जब पाप व्यक्ति में "वास करता है" तो उसके जीवन पर पाप का नियन्त्रण होता है। इसी प्रकार जब उसमें आत्मा "वास करता" है तो उसके जीवन पर आत्मा का नियन्त्रण होता है। दूसरा, रोमियों 8 में पौलुस ने वास के *ढंग* पर नहीं बल्कि वास करने के *तथ्य* पर ज़ोर दिया है। हर व्यक्ति जो मसीही है, उसमें पवित्र आत्मा वास कर रहा है और इससे उसके जीवन में अन्तर आना चाहिए!

साज़प्रदायिक कलीसियाओं के कई लेखक और प्रचारक सिखाते हैं कि उद्धार पाना और पवित्र आत्मा मिलना अलग-अलग समयों में होता है। (जब मैं लड़का था, तो साज़प्रदायिक कलीसियाओं के कुछ प्रचारक आत्मा के मिलने को "अनुग्रह का दूसरा काम" कहते थे।) परन्तु बाइबल सिखाती है कि हर व्यक्ति को पवित्र आत्मा दान के रूप में उसी समय मिलता है जब वह पिछले पापों से बचाया जाता है यानी जब वह वचन के अनुसार बपतिस्मा लेता है (प्रेरितों 2:38)। मौरिस ने लिखा कि आत्मा का पाना कुछ एक लोगों का सौभाग्य नहीं बल्कि "मसीही बनने की सामान्य और आवश्यक बात है।"[16] एच. सी. जी. माउल ने लिखा कि हमें "एक पल के लिए भी नहीं" सोचना चाहिए कि हम "ऐसे बढ़ें जैसे पवित्र [आत्मा] के शासन से प्रभु यीशु मसीह से ऊंचे या गहरे क्षेत्र में चले गए हैं।"[17]

पौलुस ने आगे कहा, "यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं" (रोमियों 8:9ग)। यदि आप में पवित्र आत्मा नहीं है तो इसका अर्थ यह है कि आपने वचन के

अनुसार बपतिस्मा नहीं लिया है (प्रेरितों 2:38)। यदि वचन के अनुसार आपका बपतिस्मा नहीं हुआ है तो आप "मसीह में" नहीं हैं (देखें रोमियों 6:3-5)। यदि आप "मसीह में" नहीं हैं तो आप "उसके" जन नहीं हैं।

शिक्षक तथा प्रचारक जॉर्ज टिप्पस रोमियों 8:9 पर टिप्पणी करने पर "मसीह का आत्मा" को मसीही व्यक्ति की *धड़कन* कहते हैं। उन्होंने लिखा कि यह तय करने के लिए कि कोई रोगी जीवित है या मर गया, डॉक्टर पहले नब्ज़ और धड़कन ही देखता है। यदि धड़कन बंद हो गई है तो रोगी मर चुका है। वैसे ही टिप्स कहते हैं कि मसीह के आत्मा के बिना व्यक्ति आत्मिक तौर पर मरा हुआ है![18]

कुछ अनुवादों में रोमियों 8:9ग को इस प्रकार व्यक्त किया गया है, "यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह मसीही नहीं है" (NEB; देखें NLT)। यह मूल अनुवाद नहीं है। परन्तु यह उस वचन पाठ के विचार को देता है क्योंकि "मसीही" (*Christianos*) का अर्थ है "जो मसीह का है।"[19] यहां पौलुस द्वारा संकेत दिए शब्दों को गलत समझना कठिन होगा: यदि तुम में आत्मा नहीं है, तो तुम मसीह के *नहीं* हो। जे. डी. थॉमस ने लिखा है, "आत्मा मसीही व्यक्ति में जिस भी अर्थ में बसता हो, यदि वह उस अर्थ में नहीं है, तो व्यक्ति वास्तव में मसीही नहीं है!"[20]

यह उन लोगों के लिए परेशानी का कारण है जो यह सिखाते हैं कि उद्धार और आत्मा का पाना अलग-अलग समय में होता है। एक अर्थ में वे यह सिखाते हैं कि हो सकता है कि किसी का उद्धार तो हो गया हो परन्तु वह अभी भी मसीही (जो मसीह का है) न हो। वे अपने सदस्यों से परमेश्वर के आगे आत्मा का दान मांगने, "उनके मनों को खोलने ताकि आत्मा उसमें आ सके" कहने का आग्रह करते हैं। उनके लेख उन विवरणों से भरे होते हैं जिन्हें उन लेखकों का मानना है कि उन्होंने अन्ततः "आत्मा पाने" पर "अनुभव किया" है।

रोमियों 8:9 उन लोगों के लिए जो यह सिखाते हैं कि आत्मा पाने के लिए "अन्य भाषाओं में बातें करने" जैसे किसी "करिश्माई" अभ्यास की आवश्यकता होती है, विशेष दिलचस्पी का कारण है। व्यवहारिक तौर पर, ऐसी शिक्षा का दावा यह होता है कि जब तक उनके समूह के सदस्य में "करिश्माई" अनुभव नहीं आ जाता तब तक वह वास्तव में यीशु का नहीं है और सच्चा मसीही नहीं है। ऐसी संगतियों में "दिखाने" ("अन्य भाषाओं में बोलने" या ऐसे काम करने) के लिए निरन्तर दबाव बनाया जाता है।

रोमियों 8 में पौलुस मसीही लोगों से आत्मा को "पाने" का आग्रह नहीं कर रहा था। वह उन्हें याद दिला रहा था कि उनके पास आत्मा पहले से *था* और यह कि इस तथ्य से उनके जीवन प्रभावित होने चाहिए।

आयत 10 में जाने से पहले हमें पवित्र आत्मा के बारे में उन कई बातों पर ध्यान देना चाहिए जो आयत 9 कहती है। पहले तो यह देखें कि आत्मा को यहां "परमेश्वर का आत्मा" और "मसीह का आत्मा" कहा गया है। "परमेश्वरत्व" के व्यक्तियों में कुछ अन्तर किया जाना चाहिए (रोमियों 1:20; कुलुस्सियों 2:9; KJV)। परन्तु तीनों आपस में एक दूसरे से इतना जुड़े हुए हैं कि उन्हें पूरी तरह से अलग नहीं किया जा सकता। जो काम परमेश्वर का एक सदस्य करता है दूसरा भी वही काम करने की बात कही गई है। जिस प्रकार पवित्र आत्मा *परमेश्वर का* आत्मा है और *मसीह का* आत्मा भी है (रोमियों 8 में हमारे अन्तर आत्मा के वास [आत्मा] और हमारे मसीह को

अपने अन्तर रखने [आयत 10] में कोई अन्तर नहीं किया गया)। ध्यान दें कि आयत 9 ''आत्मा में'' होने और आत्मा के हम ''में'' होने दोनों की बात कहती है। इन दोनों आकृतियों का मेल उस सज़्बन्ध की निकटता पर जोर देता है जो मसीही व्यज़्ति और आत्मा में होनी चाहिए।

परमेश्वर जो कुछ कर रहा है (आयत 10)

आत्मा के हम में बसने से हमें ज़्या लाभ मिलता है ? आयत 10क कहती है, ''यदि मसीह तुम में है।'' इस आयत में ''यदि'' का अर्थ है ''ज़्योंकि'' और ''मसीह तुम में'' का अर्थ है ''परमेश्वर का आत्मा [पवित्र आत्मा] तुम में बस [रहा] है'' (आयत 9)। पौलुस ने घोषणा की कि *ज़्योंकि* मसीह का आत्मा तुम में है, ''तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित[21] है'' (आयत 10ख)।

आयत 10 में वर्णित ''देह'' आयत 11 वाली ''मरनहार'' देह है।[22] चाहे आप मसीही हैं और आत्मा आप में बसा हुआ है, तौ भी आपका शरीर शारीरिक मृत्यु के अधीन है। यह ''[आदम के] पाप के कारण मरा हुआ है।''[23] सच होने के बावजूद, आपकी ''आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है''[24] ज़्योंकि आपको यीशु के लहू के द्वारा धर्मी ठहराया गया है।[25] इसमें रोमियों 8:10ख पर विचार करने का आसान ढंग है कि आपका शरीर आदम के कारण मरा हुआ है, परन्तु आपकी आत्मा मसीह के कारण जीवित है !

परमेश्वर जो करेगा (आयत 11)

ज़्या इसका अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा की सेवकाई मानवीय आत्मा से जुड़ी हुई है और इसका हमारी देहों पर कोई असर नहीं है ? आयत 11 इसका उज़र देती है, ''नहीं।'' इस आयत का आरज़्भ इस भाग के मुज़्य भाग से होता है: ''और यदि [ज़्योंकि] उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है'' (आयत 11क)। ''उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया'' कि ''परमेश्वर का आत्मा'' एक लज़्बा ढंग है। यहां ज़ोर इस तथ्य पर है कि यह वही परमेश्वर है, जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। ज़्योंकि तुम में *उस* परमेश्वर का आत्ज़ा वास करता है, ''जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुज़्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा'' (आयत 11ख)।

नया नियम शारीरिक पुनरुत्थान के बारे में बहुत कुछ कहता है और आम तौर पर हमारा पुनरुत्थान यीशु के जी उठने से जोड़ा जाता है। उदाहरण के लिए, पौलुस ने लिखा ''हम एक उद्धारकर्ज़ा प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शज़्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा यह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदल'' देगा (फिलिप्पियों 3:20ख, 21क)। शारीरिक पुनरुत्थान की सबसे लज़्बी चर्चा 1 कुरिन्थियों 15 में मिलती है। नीचे उस अध्याय की कुछ मुज़्य आयतें दी गई हैं:

> परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ (आयत 20)।
>
> अब कोई यह कहेगा, कि मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और कैसी देह के साथ

> आते हैं? हे निर्बुद्धि, जो कुछ तू बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता। और जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होने वाली है, परन्तु निरा दाना है, चाहे गेहूं का, चाहे किसी और अनाज का। परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उस को देह देता है; और हर एक बीज को उस की विशेष देह (आयतें 35-38)।
>
> मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ के साथ जी उठता है। स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है: जब कि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है। ऐसा ही लिखा है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना (आयतें 42-44)।

आइए रोमियों 8:11 की अद्‌भुत प्रतिज्ञा में वापस आते हैं: "जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जिलाएगा।" जॉन आर. स्टॉट ने टिप्पणी की कि "जी उठना में बदलाव अर्थात हमारी देह को जिलाकर हमारे व्यक्तित्व के नये और महिमामय वाहन में बदलना है और हर प्रकार की निर्बलता, रोग, पीड़ा, नाश और मृत्यु से इसे छुड़ाना है।"[26]

आयत 11ख के सम्बन्ध में दो टिप्पणियां बिल्कुल उपयुक्त हैं। पहली तो यह कि पुनरुत्थान के समय परमेश्वर हमारे प्राणों को रखने के लिए केवल *कुछ* देहें नहीं बनाएगा। इसके बजाय वह *हमारी* "मरनहार देहों" को जीवन देगा। मरनहार देह में जो मिट्टी में मिल जाती है और अविनाशी देह में जो जिलाई जाती है एक विलक्षण सम्बन्ध होगा। इसमें *निरन्तरता* का संकेत है। क्या मुझे इसकी समझ है? नहीं, मैं उस देह के बारे में जो आत्मिक, अविनाशी, महिमामय और शक्तिशाली है समझ नहीं सकता (1 कुरिन्थियों 15:42-44)। तौभी आयत 11ख इस बात की पुष्टि है कि पुनरुत्थान के बाद मैं फिर भी *मैं* रहूंगा।

दूसरा, जब पौलुस ने कहा कि परमेश्वर हमारी मरनहार देहों को जीवन देगा, तो "जीवन" का अर्थ मरे हुओं में से जिलाने से कहीं अधिक है। अच्छे और बुरे हर प्रकार के लोगों की देहें मसीह के द्वितीय आगमन के समय कब्र से निकल आएंगी (यूहन्ना 5:28, 29)। रोमियों 8:11 में जीवन का अर्थ इसके पूर्ण अर्थ में अर्थात परमेश्वर की उपस्थिति कहा गया है। विश्वासयोग्य लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के योग्य होने के लिए देहें दी जाएंगी, ऐसी देहें जो सदा के लिए उसकी महिमायुक्त परिस्थिति में रह सकती हैं और रहेंगी। हमारी "मरनहार देहों" को इस प्रकार "अमर कर दिया" जाएगा।[27]

यह सब कैसे होगा? किसी न किसी तरह शारीरिक पुनरुत्थान का प्रबन्ध उस आत्मा से जो हम में वास करता है। आयत 11 के मुख्य वाक्यांश इस प्रकार हैं: "और यदि उसी का आत्मा ... तुम में बसा हुआ है, तो [परमेश्वर] ... तुम्हारी मरनहार देहों को भी *अपने आत्मा* के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।" जैसा कि आम तौर पर होता है, पौलुस ने हमारी दिलचस्पी बढ़ाने के लिए ही यह बताया न कि हमारी जिज्ञासा को शांत करने के लिए।

"के द्वारा" का अनुवाद उपसर्ग *dia* से किया गया है। कर्मकारक के बाद[28] *dia* का "के

कारण'' है। कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''आत्मा जो तुम में बसा हुआ है'' कर्मकारक में है, इसलिए रोमियों 8:11 के कहने का वह अर्थ हो सकता है जो 2 कुरिन्थियों 5 में पौलुस ने कहा। वहां ''अपने स्वर्गीय घर को पहन'' लेने की तीव्र इच्छा की चर्चा करते हुए (आयत 2), पौलुस ने कहा कि ''जिसने हमें इसी बात के लिए तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिसने हमें ज़्याने में आत्मा भी दिया है'' (आयत 5)। रोमियों 8:11ख के यह कहने का अर्थ हो *सकता है* कि हम में आत्मा का बसना हमारे पुनरुत्थान की *गारंटी* है।

अन्य प्राचीन हस्तलेखों में *dia* के बाद सज़्प्रदान कारक आता है, जो इसका अर्थ ''के द्वारा, के माध्यम से'' बना देता है। इस प्रकार पढ़ना अधिकतर अनुवादकों को अच्छा लगता है और इससे यह संकेत मिलता है कि पवित्र आत्मा सक्रिय रूप से हमारे शारीरिक पुनरुत्थान में शामिल हुआ। जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे ने टिप्पणी की, ''यदि परमेश्वर ने उसी साधन को लगाया [जैसे मरे हुओं में से यीशु के जी उठने के लिए इस्तेमाल किया था], तो हम वैसे ही परिणामों की उज़्मीद कर सकते हैं।''[29]

पुनरुत्थान में हम आत्मा की संक्षिप्त भूमिका स्पष्ट नहीं बता सकते।[30] इतना जानना ही काफ़ी है कि उसका हमारे अन्दर वास करना हमें यह आश्वासन देता है कि हम जिलाए *जाएंगे*!

दो देनदारियां (8:12, 13)

शरीर और आत्मा के बीच पौलुस का अन्तर 12 और 13 आयतों में समाप्त हो जाता है। ये आयतें देनदारियों की बात करती हैं। जिनमें एक तो स्पष्ट है और दूसरी का संकेत है और ये आत्मा के हमारे कर्ज़ को पूरा करने के महत्व की बात करती हैं।

एक कर्ज़ जो हमें देना है (आयत 12)

आयत 12 का आरज़्भ ''इसलिए'' शज़्दों से होता है। यानी पौलुस उन सच्चाइयों को जो उसने बताई थीं बहुत विशेष प्रासंगिकता बनाने को तैयार था। उसने अपने पाठकों को ''हे भाइयो'' कहकर बुलाया जो लगाव और ध्यान को दिखाता एक शज़्द है। उसने कहा, ''इसलिए हे भाइयो हम शरीर के कर्ज़दार नहीं हैं'' (आयत 12क)। ''कर्ज़दार'' का अनुवाद *opheiletes* से किया गया है, जो 1:14 में पौलुस द्वारा सुसमाचार सुनाने की अपनी जिज़्मेदारी को बताने के लिए इस्तेमाल किया गया। NASB वाली मेरी प्रति में 1:14 में ''under obligation'' पर यह नोट दिया गया है: ''मूलतया *debtor.*'' 8:12 में कई अनुवादों में ''हम कर्ज़दार हैं'' है (KJV; RSV; ESV; देखें मेकोर्ड)। मेरे लिए ''देनदार'' शज़्द ''under obligation'' वाज़्यांश से भारी लगता है।

हम किसके देनदार हैं? पौलुस ने पहले वह कर्ज़ बताया जो अब हमारे ऊपर नहीं है: ''हम शरीर के कर्ज़दार नहीं, कि शरीर के अनुसार दिन काटें'' (8:12ख)। मसीही बनने से पहले हम ''पाप के दासत्व'' (7:14) में थे और इसकी आज्ञा मानने को विवश थे, परन्तु जब हमने बपतिस्मा लिया और परमेश्वर के परिवार के लोग बन गए, तो परमेश्वर ने हमारे अन्दर वास करने के लिए अपने आत्मा को भेजा। इसलिए अब हम पाप के निर्देश के अनुसार काम करने को विवश नहीं रहे! रिचर्ड रोजर्स ने इसे इस प्रकार कहा है:

> ... जब शरीर हम से कुछ मांग करने के लिए आता है, तो हम शरीर से कह सकते हैं, ''मैंने अब तुम्हारा कुछ नहीं देना। मैं तुम्हारा कर्ज़दार नहीं हूं। मैं तुम से किसी प्रकार का लाभ नहीं लेता। तुम ने मेरी भलाई के लिए कुछ नहीं किया। तुम ने मेरे जीवन में कोई भलाई नहीं लाई। मैंने तुम्हारा कुछ नहीं देना है।''[31]

यूजीन पीटर्सन ने रोमियों 8:12 के अपने अनुवाद में थोड़ी सी हंसी का स्पर्श डाला है: ''... हम ने इस पुराने ... जीवन का नया पैसा भी नहीं देना है। इसमें हमारे लिए कुछ भी नहीं, बिल्कुल कुछ नहीं है। इसे देने के लिए सबसे बढ़िया चीज़ यह है कि इसे अच्छी तरह दफ़नाकर नये जीवन को अपना लिया जाए'' (MSG)।

कलीसिया के कुछ लोग यह सोचते प्रतीत होते हैं कि वे शरीर के देनदार *हैं,* यानी वे अपनी शारीरिक अभिलाषाओं के कर्ज़दार हैं। जब वे पाप करते हैं, तो कई बार कहते हैं, ''यह मेरे वश में नहीं था। पौलुस ने कहा कि ऐसा कुछ नहीं है ज्योंकि यह तो सब तभी बदल गया था जब हम परमेश्वर के आत्मा को दे दिए गए थे।''

यदि हम पाप के कर्ज़दार नहीं हैं तो फिर हम किसके देनदार हैं। पौलुस ने अपनी बात पूरी नहीं की। वह अपने अगले विचार की ओर बढ़ गया। परन्तु स्पष्ट है कि यह विचार इस प्रकार पूरा होना चाहिए: ''परन्तु हम आत्मा के [देनदार हैं], ताकि आत्मा के अनुसार जीवन बिताएं।'' हम आत्मा के कर्ज़दार हैं।

एक कर्ज़ जो चुकाया जाना आवश्यक है (आयत 13)

ज़्या इससे कोई फर्क पड़ सकता है कि हम आत्मा के अनुसार जीने के लिए कर्ज़ चुकाने की कोशिश करें या न? बिल्कुल! पौलुस ने पहले इसके उज़र का नकारात्मक पक्ष बताया: ''ज्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे'' (आयत 13क)। ''शरीर के अनुसार'' जीने का ज़्या अर्थ है? इसका अर्थ ''शरीर से घिरे वातावरण में रहना यानी जीवन की चिंताओं में रहना है।''[32] बीज बोने वाले के दृष्टांत में यीशु ने उन लोगों की बात की जो ''शरीर की चिंता और धन का धोखा, और अन्य वस्तुओं का लोभ'' वचन को अपने मन से निकालने देते हैं (मरकुस 4:19)। यदि हम ''शरीर के अनुसार'' जीते हैं तो हमारी ''आत्मिक मृत्यु'' हो जाएगी। आर. सी. एच. लैंसकी ने लिखा है, ''जो लोग यह सोचते हैं कि वे वास्तव में जी रहे हैं जबकि वे शरीर को प्राथमिकता देते हैं वास्तव में वे अनन्त मृत्यु की ओर जा रहे हैं।''[33]

याद रखें की पौलुस परमेश्वर के परिवार के लोगों अर्थात ''भाइयों'' से बात कर रहा था। मसीही लोगों के लिए, जिनमें आत्मा का वास है, आत्मा की उपेक्षा करना[34] और ''शरीर के अनुसार'' जीना सज़्भव है जिससे वे आत्मिक तौर पर ''मर'' सकते हैं? अफ़सोस के साथ कहना पढ़ता है कि हां। यदि ऐसा न होता तो पौलुस के ताड़ना देने का कोई अर्थ नहीं होना था।

बेशक मसीही जीवन ऐसा नहीं होना *चाहिए*। पौलुस चर्चा के सकारात्मक पक्ष की ओर मुड़ गया: ''यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे,[35] तो जीवित रहोगे'' (आयत 13ख)। ''क्रियाओं मारोगे'' अकेले यूनानी शज़्द, *thanatoo* (thanatos), ''मृत्यु से'' लिया गया है। *Thanatoo*

''किसी की हत्या करना'' या ''किसी को हत्या के लिए देना'' के अर्थ वाला एक मज़बूत शब्द है। इसका इस्तेमाल ''मृत्युदण्ड और इसके क्रियान्वयन के'' लिए किया जाता था।[36] पौलुस मसीही लोगों को क्या ''क्रियान्वित'' करने का आदेश दे रहा था? ''देह के कामों को।'' इस संदर्भ में हम इस वाक्यांश का अनुवाद ''देह के *दुष्कर्मों*'' कर सकते हैं (देखें NIV; JB)। स्टॉट ने ''देह के दुष्कर्मों'' की परिभाषा ''हमारी देह (हमारे आंख, कान, मुंह, हाथों या पांवों) का इस्तेमाल परमेश्वर और दूसरे लोगों की सेवा के बजाय अपने लिए करना'' के रूप में किया है।[37]

कुछ लोग इन वचनों को इस प्रकार सिखाने के लिए गलत इस्तेमाल करते हैं कि देह को मारा जाना, पीड़ित किया जाना या किसी प्रकार दुखित करना होना चाहिए;[38] परन्तु पौलुस ने यह नहीं सिखाया। उसने कहा कि ''देह के *कामों* को मारो।''

क्या हम यह अपने आप कर सकते हैं? नहीं, लेकिन पौलुस ने कहा कि हम इसे ''आत्मा के द्वारा'' यानी हमारे अन्दर वास करने वाले आत्मा की सहायता से कर सकते हैं। फिर से पौलुस ने यह नहीं बताया कि यह *कैसे* होता है बल्कि उसने केवल यह दावा किया कि होता ऐसा ही है। मसीही होने के कारण हमारे पास वे संसाधन हैं जो गैर मसीही लोगों के पास नहीं हैं। हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सहायता के लिए परमेश्वर ने अपना आत्मा दिया था। इफिसियों 3 में पौलुस ने कहा कि हम ''उस [परमेश्वर] के आत्मा के अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते'' जाते हैं (आयत 16)। क्योंकि परमेश्वर ''ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है'' (आयत 20)।

पौलुस के सावधानी पूर्व बनाए गए संतुलन पर ध्यान दें। ''देह की क्रियाओं को मारना'' केवल आत्मा से नहीं होता और अपने आप भी नहीं हो सकता। पौलुस ने कहा, ''आत्मा *से तुम* शरीर के कामों को मार रहे हो।'' भक्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए हम अपना पूरा प्रयास करते हैं; और इसके साथ ही हम आवश्यक सामर्थ के लिए प्रभु पर निर्भर रहते हैं। आत्मनिर्भर होने के बजाय हमें परमेश्वर पर निर्भर होना सीखना आवश्यक है। *आत्मनिर्भरता का मार्ग घबराहट, निराशा और असफलता की ओर ले जाता है, जबकि परमेश्वर पर निर्भरता का मार्ग मन की शांति और विजय की ओर ले जाता है (रोमियों 8:6, 37)।*

क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की सहायता से हम इस जीवन में पाप रहित सिद्धता की स्थिति पर पहुंच सकते हैं? कदापि नहीं। पौलुस द्वारा वर्तमानकाल के इस्तेमाल पर ध्यान दें: ''तुम देह के कामों को *मार* रहे हो।'' यूनानी भाषा में वर्तमानकाल निरन्तर क्रिया का संकेत देता है। शरीर के साथ हमारी लड़ाई तब तक जारी रहेगी जब तक हम अन्तिम सांस नहीं छोड़ देते। पौलुस ने हमें आश्वस्त किया कि यह आशाहीन लड़ाई नहीं है। क्योंकि जो लड़ाई हम लड़ रहे हैं, उसमें परमेश्वर हमारी ओर है (देखें 8:31-39)!

परमेश्वर के आत्मा की सहायता से इसका परिणाम क्या हो सकता है? ''यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, *तो जीवित रहोगे*'' (आयत 13ख, ग)। अब हमें सचमुच में जीने योग्य जीवन मिल सकता है (देखें यूहन्ना 10:10); इसके बाद हमें प्रभु के साथ सदा तक रहना मिल सकता है।

सारांशः दो नियतियां

अपने अध्ययन में हमने *दो दिशाएं* देखी हैं जिनमें हम जा सकते हैं। इनमें तो एक शारीरिक मार्ग है और दूसरा आत्मिक मार्ग हमने *दो वास करने वालों* के बारे में जाना है। या तो हमारे अन्दर पाप वास करता है या परमेश्वर का आत्मा हम में बसता है। हमें *दो देनदारियों* के बारे में भी बताया गया है, जिनमें एक वह देनदारी है जिसके मसीही लोग अब देनदार नहीं है (शरीर की) और एक देनदारी अभी शेष है (आत्मा की)। ऐसी सामग्री महत्वपूर्ण ज़्यों है? ज़्योंकि मनुष्यजाति की *दो नियतियां* उसकी प्रतीक्षा कर रही हैं। अपने वचनपाठ में पीछे जाएं और देखें कि मृत्यु और जीवन में कैसे अन्तर किया गया है:

> शरीर पर मन लगाना तो *मृत्यु* है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना *जीवन* और शान्ति है (आयत 6)।
>
> ज़्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो *मरोगे,* यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो *जीवित रहोगे* (आयत 13)।

इसे आसान शज़्दों में कहें तो शरीर *मृत्यु* देता है जबकि आत्मा से *जीवन* मिलता है।

दो मंज़िलें हैं, परन्तु *निर्णय* केवल *एक* है। आपको शरीर और आत्मा में से एक को चुनना है। आप नाश हो रहे शरीर की बात मानकर इसमें चलते रह सकते हैं या इस विश्वास से जो आत्मिक है सदा तक रहेगा जीना आरज़्भ कर सकते हैं। यदि आपने दान के रूप में परमेश्वर के आत्मा को पाने के लिए अभी बपतिस्मा नहीं लिया है (प्रेरितों 2:38), तो मैं आज ही आप से बपतिस्मा लेने के लिए कहता हूं। यदि आपने बपतिस्मा लिया हुआ है परन्तु अब "शरीर के अनुसार जी रहे" हैं (रोमियों 8:13क), तो मैं इसी समय आपसे मन फिराकर प्रभु की ओर वापस आने का आग्रह करता हूं (प्रेरितों 8:22)!

टिप्पणी

[1]ऐसी ही एक तुलना के लिए देखें गलातियों 5:16-26. [2]वाल्टर ब्राउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* द्वितीय संस्क., संशो. विलियम एफ. अर्ंट एण्ड एफ. विलबुर गिंगरिक (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 874. [3]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 250. [4]*न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री,* संस्क. एफ. एफ. ब्रूस, एच. एल. एलिसन, एण्ड जी. सी. डी. हावले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1986), 1331, में लेसिली सी. एलन, "रोमन्स।" [5]ऐसी सोच कि बाइबली उदाहरण के लिए, मज़ी 16:23 में पतरस को यीशु की डांट देखें। [6]चार्ल्स स्पर्जन, *स्पर्जन'स कमैंट्री ऑन ग्रेट चैप्टर्स ऑफ़ द बाइबल,* संक. टॉम कार्टर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1998), 259. [7]अंग्रेज़ी में "Spirit" को छोटे "s" के साथ भी लिखा जा सकता है, जो "शारीरिक वस्तुओं" के विपरीत "आत्मिक वस्तुएं" बना देगा (मेकोर्ड)। "आत्मा की बातें" "आत्मिक बातें" (और इसके उलट) *ही हैं,* इसलिए इससे अधिक फर्क नहीं पड़ता कि "S" का इस्तेमाल किया जाता है या छोटे "s"। [8]अमेरिका तथा अन्य पश्चिमी देशों में रहने वाले लोग इससे उस *विज्ञापन* से मिला सकते हैं जो एक अर्थ में यह कहता है कि इस या उस चीज़ के बिना हम "रह नहीं सकते।" [9]जिम मैज़्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग, इन टू दि बाइबल सीरीज़ (लज़्बॉक, टैज़्सस: मोनटैज़्स पब्लिशिंग कं., 1982), 237. [10]सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड

ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. और संशो. जोसेफ हैनरी थायर (एडिनबर्ग: टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 265.

[11]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1988), 306. [12]कई लोग रोमियों 8:7 को 7:1 में आरज़्भ हुई व्यवस्था पर पौलुस की चर्चा का निष्कर्ष मांगते हैं। [13]अब *sarx* पर शज़्द अध्ययन की समीक्षा कर सकते हैं जो "मानवीय दुविधा (7:14)" पाठ के बाद दिया गया है। [14]यूनानी धर्मशास्त्र में "तुम" पर दोहरा ज़ोर दिया गया है। पहले तो "तुम" के लिए यूनानी शज़्द में क्रिया को जोड़ा गया है, जिसका अर्थ "तुम हो" पर है। दूसरा, "तुम" के लिए शज़्द को ज़ोर देने के लिए वास्तव के आरज़्भ में रखा गया है। [15]एफ. एफ. ब्रूस, *दि बुक ऑफ़ एज़्ट्स,* संशो. संस्क. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1988) 88. [16]मौरिस, 308. [17]हैंडले सी. जी. मोउल, *दि एपिस्टल ऑफ़ सेंट पॉल टू द रोमन्स,* दसवां संस्क., दि एज़्पोजिस्टर'स बाइबल (लंदन: हॉडर एण्ड स्टाउटन, 1894), 206. [18]जार्ज टिप्पस, "आस्क फॉर द एंसियंट पाथ्स," जुडसोनिया चर्च ऑफ़ क्राइस्ट जुडसोनिया आरकैंसा, 8 जुलाई, 2003 में दिया गया प्रवचन। [19]ब्रूस बर्टन, डेविड वीरमैन, एण्ड नेल विलसन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पज़्लिशर्स, 1992), xxvi अतिरिज़्त हवालों "मसीही" शज़्द की इस परिभाषा पर चर्चा के लिए देखें रोपर, 429-30. [20]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैज़्सस: स्वीट पज़्लिशिंग कं., 1965), 57.

[21]यूनानी धर्म शास्त्र में मूलतया "आत्मा जीवन [है]" जिस प्रकार कुछ अनुवादों में "आत्मा जीवन है" देखें KJV. फिर छोटे "s" या बड़े "S" का अनुवाद किया गया है तो भी शिक्षा मूलतया वही है कि जीवनदाता आत्मा *हमारी* आत्माओं को जीवन देता है। [22]एक और सज़्भावित व्याज़्या यह है कि "शारीरिक" इसे "शरीर" कहने का एक और ढंग है: "शरीर [आत्मिक] मत्यु है।" परन्तु आयत 10 आयत 11 के बहुत निकट प्रतीत होती है जो "शारीरिक" की व्याज़्या हर व्यज़्ति द्वारा अपनाई गई नाशवान देह के रूप में करती है। [23]देखें 1 कुरिन्थियों 15:22क। रोमियों 5:15-21 पर चर्चा पर भी विचार करें। [24]2 कुरिन्थियों 4:16 से तुलना करें। [25]इस आयत में अनुवादित यूनानी शज़्द "धर्म" का अनुवाद "धर्मी ठहराया जाना" भी हो सकता है। [26]जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीज़्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 227. [27]मैज़्गुइगन, 240 से लिया गया। [28]यूनानी में कर्मकारक से प्रत्यक्ष उद्देश्य का और सज़्प्रदान कारक से परोक्ष उद्देश्य का संकेत मिलता है। [29]जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडल्टन, *थेस्सलोनियंस, कोरन्थियंस, गलेशियंस, एण्ड रोमन्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पज़्लिशिंग, तिथि नहीं), 360. [30]"यह स्पष्ट नहीं है कि पौलुस यह कह रहा था कि हमें जिलाने का काम आत्मा करेगा या यह गारंटी देता है कि हम जी उठेंगे। दोनों ही सही हैं ..." (मौरिस, 311)।

[31]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: ए कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लज़्बॉक, टैज़्सस: सनसैट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 122. [32]मौरिस, 312. [33]आर. सी. एच. लेंसकी, *दि इंटरप्रिटेशन ऑफ़ सेंट पॉल'स एपिस्टल टू द रोमन्स* (पृष्ठ नहीं: लूथरन बुक कन्सर्न, 1936; रिप्रिंट, मिनियापुलिस: आगसबर्ग पज़्लिशिंग हाउस, 1961), 517. [34]अगले एक पाठ हमें हम इस तथ्य पर चर्चा करेंगे कि हम आत्मा को "बुझा" सकते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:19)। [35]KJV में "mortify" है। "Mortify" का अर्थ है "मारना," परन्तु आज इस शज़्द का इस्तेमाल अधिक नहीं किया जाता। NKJV में "put to death" है। [36]बाउर, 352. [37]स्टॉट, 228. [38]बाइबल बताती है कि हमारी देहें परमेश्वर का मन्दिर हैं (1 कुरिन्थियों 6:19) और इन्हें दूषित नहीं किया जाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 3:17)।